

एम.एच.आई.-04: भारत में राजनीतिक संरचनाएं
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.आई.-04

सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.आई.-04/ए.एस.टी./टी.एम.ए./2024-25

पूर्णांक : 100

नोट : किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों में क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. सातवाहन राज्य पर एक लेख लिखिए। 20
2. प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर वाद-विवाद पर चर्चा कीजिए। 20
3. आधुनिक इतिहासकारों ने दिल्ली सल्तनत काल के दौरान राज्य-निर्माण को किस प्रकार देखा। विस्तार से वर्णन कीजिए। 20
4. विजयनगर साम्राज्य की राज्य-निर्माण की प्रकृति की चर्चा कीजिए। 20
5. मालवा साम्राज्य के गठन पर एक लेख लिखिए। 20

भाग-ख

6. चोल काल के दौरान राज्य पर टिप्पणी कीजिए। 20
7. पांड्य काल के दौरान राज्य के प्रशासन पर चर्चा कीजिए। 20
8. मुगल प्रशासन की प्रकृति क्या थी? चर्चा कीजिए। 20
9. औपनिवेशिक वन नीति की प्रकृति पर टिप्पणी कीजिए। 20
10. औपनिवेशिक राजस्व नीति के उद्देश्य क्या थे? चर्चा कीजिए। 20

एम.एचआई.-04: भारत में राजनीतिक संरचनाएं

पाठ्यक्रम कोड: एम.एच.आई.-04

सत्रीय कार्य कोड: एम.एच.आई.-04 / ए.एस.टी./ टी.एम.ए./2024-25

पूर्णांक: 100

अस्वीकरण/विशेष नोट: ये सत्रीय कार्य में दिए गए कुछ प्रश्नों के उत्तर समाधान के नमूने मात्र हैं। ये नमूना उत्तर/समाधान निजी शिक्षक/शिक्षक/लेखकों द्वारा छात्र की सहायता और मार्गदर्शन के लिए तैयार किए जाते हैं ताकि यह पता चल सके कि वह दिए गए प्रश्नों का उत्तर कैसे दे सकता है। हम इन नमूना उत्तरों की 100% सटीकता का दावा नहीं करते हैं क्योंकि ये निजी शिक्षक/शिक्षक के ज्ञान और क्षमता पर आधारित हैं। सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्नों के उत्तर तैयार करने के संदर्भ के लिए नमूना उत्तरों को मार्गदर्शक/सहायता के रूप में देखा जा सकता है। चूंकि ये समाधान और उत्तर निजी शिक्षक/शिक्षक द्वारा तैयार किए जाते हैं, इसलिए त्रुटि या गलती की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। किसी भी चूक या त्रुटि के लिए बहुत खेद है। हालांकि इन नमूना उत्तरों / समाधानों को तैयार करते समय हर सावधानी बरती गई है। किसी विशेष उत्तर को तैयार करने से पहले और अप-टू-डेट और सटीक जानकारी, डेटा और समाधान के लिए कृपया अपने स्वयं के शिक्षक/शिक्षक से परामर्श लें। छात्र को विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान की गई आधिकारिक अध्ययन सामग्री को पढ़ना और देखना चाहिए।

नोट: किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखें। सत्रीय कार्य दो भागों में क एवं ख में विभाजित है। आपको प्रत्येक भाग से कम से कम दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में लिखने हैं। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

भाग-क

1. सातवाहन राज्य पर एक लेख लिखिए।

सातवाहन राज्य, प्राचीन भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जो लगभग 230 ईसा पूर्व से 220 ईस्वी तक अस्तित्व में रहा। इस लेख में, हम सातवाहन राज्य की स्थापना, प्रशासन, संस्कृति, आर्थिक स्थिति, और पतन की चर्चा करेंगे।

स्थापना और इतिहास

सातवाहन राज्य की स्थापना आंध्र प्रदेश के क्षेत्र में हुई थी। इसके संस्थापक, सातवाहन वंश के पहले शासक थे, जिनका नाम सिमुक था। सिमुक ने चंद्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी बिंदुसार के बाद दक्षिण भारत में अपना राज्य स्थापित किया। सातवाहन वंश की स्थापना के साथ ही, दक्षिण भारत में एक स्थिर और प्रभावशाली साम्राज्य की नींव रखी गई।

सातवाहन वंश का शासनकाल कुल 450 वर्षों का था और इसे विभिन्न शासकों द्वारा चलाया गया। इसके प्रमुख शासकों में कणिष्क, गौतमीपुत्र शातकर्णी, और श्री शिवसेन शामिल हैं। गौतमीपुत्र शातकर्णी, विशेष रूप से, सातवाहन साम्राज्य की शक्ति और समृद्धि के प्रतीक थे। उनकी सत्ता के दौरान, साम्राज्य ने राजनीतिक और आर्थिक दोनों क्षेत्रों में महत्वपूर्ण उन्नति की।

प्रशासन और संगठन

सातवाहन साम्राज्य का प्रशासन एक सुव्यवस्थित प्रणाली पर आधारित था। साम्राज्य को कई प्रांतों में बांटा गया था, जिन्हें 'अधिकृत' और 'मंडल' नामक प्रशासनिक इकाइयों में विभाजित किया गया था। प्रत्येक प्रांत का प्रशासन एक गवर्नर या अधिकारी द्वारा किया जाता था, जिसे 'महराट' कहा जाता था। इन प्रांतों के अंतर्गत विभिन्न नगरों और गांवों की देखरेख के लिए स्थानीय अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

सातवाहन शासकों ने अपने शासनकाल के दौरान एक मजबूत सैन्य शक्ति का निर्माण किया। यह सैन्य शक्ति उनकी सामरिक शक्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। उन्होंने अपने सैन्य अभियानों के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों को अपने अधीन किया और व्यापार मार्गों पर नियंत्रण स्थापित किया।

संस्कृति और धर्म

सातवाहन साम्राज्य के शासकों ने भारतीय संस्कृति और धर्म के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस काल में बौद्ध धर्म का प्रसार तेजी से हुआ। सातवाहन शासकों ने बौद्ध धर्म के अनुयायियों को संरक्षण प्रदान किया और बौद्ध स्तूपों और विहारों के निर्माण में योगदान दिया। गुफाओं और स्तूपों की खुदाई से हमें इस काल की धार्मिक गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

सातवाहन शासकों ने जैन धर्म को भी समर्थन दिया, हालांकि बौद्ध धर्म की तुलना में इसका प्रभाव कम था। इस काल के दौरान, जैन आचार्यों और संतों ने दक्षिण भारत में अपने विचारों का प्रचार किया और समाज के विभिन्न वर्गों में जैन धर्म की जड़ों को मजबूत किया।

आर्थिक स्थिति

सातवाहन साम्राज्य का आर्थिक आधार व्यापार और कृषि पर निर्भर था। यह काल व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, क्योंकि सातवाहन साम्राज्य ने कई प्रमुख व्यापार मार्गों पर नियंत्रण स्थापित किया था। इन व्यापार मार्गों के माध्यम से, साम्राज्य ने विदेशों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित किए, विशेषकर रोम साम्राज्य और अन्य पश्चिमी देशों के साथ। यह व्यापार न केवल आर्थिक समृद्धि का कारण बना, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी एक महत्वपूर्ण माध्यम था।

कृषि भी सातवाहन राज्य की आर्थिक नींव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। विभिन्न कृषि गतिविधियों और तकनीकों के माध्यम से, इस काल में कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। सिंचाई के लिए बनाए गए बांध और नहरें कृषि की उन्नति के प्रमुख कारक थे।

पतन

सातवाहन साम्राज्य का पतन कई कारणों से हुआ। आंतरिक संघर्ष और बाहरी आक्रमणों ने साम्राज्य को कमजोर किया। सातवाहन शासकों के बाद, उनका साम्राज्य छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया। बाहरी आक्रमणों में शकों और कुषाणों का आक्रमण विशेष रूप से महत्वपूर्ण था,

जिसने साम्राज्य की सत्ता को समाप्त कर दिया। इसके अलावा, प्रशासनिक अव्यवस्था और आर्थिक कठिनाइयों ने भी साम्राज्य के पतन में योगदान दिया।

निष्कर्ष

सातवाहन राज्य भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में उभरता है। इसके शासकों ने अपने शासनकाल के दौरान राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान दिया। सातवाहन साम्राज्य का प्रशासन, संस्कृति, और आर्थिक स्थिति ने भारतीय इतिहास की धारा को प्रभावित किया और इसके पतन ने नए साम्राज्यों की शुरुआत की। इस काल की अध्ययन से हमें प्राचीन भारतीय राजनीति, संस्कृति, और अर्थशास्त्र की गहरी समझ प्राप्त होती है।

2. प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर वाद-विवाद पर चर्चा कीजिए।

प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर वाद-विवाद

प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति का अध्ययन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोणों और वाद-विवादों का समावेश है। इस युग का समय लगभग 6वीं से 12वीं सदी तक का माना जाता है, जो एक संक्रमणकालीन दौर था। इस काल में भारतीय राजनीति, सामाजिक संरचना, और धार्मिक मान्यताओं में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर विभिन्न इतिहासकारों और विद्वानों ने अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं, जिससे इस विषय पर वाद-विवाद की स्थिति बनी रहती है।

1. राजनीतिक संरचना और शासकगण

इस युग में विभिन्न राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें प्रमुख थे गुप्त, हर्षवर्धन, चालुक्य, राष्ट्रकूट, और पाल। इन राजवंशों के शासकों की प्रशासनिक नीतियाँ और सैन्य गतिविधियाँ महत्वपूर्ण थीं। विद्वानों के बीच इस बात पर वाद-विवाद है कि क्या इन शासकों ने केंद्रीकृत शासन प्रणाली अपनाई थी या विकेंद्रीकृत। कुछ विद्वान मानते हैं कि इस युग में केंद्रीकृत शासन प्रणाली का अभाव था और स्थानीय शासक स्वतंत्र रूप से शासन कर रहे थे, जबकि अन्य विद्वानों का मानना है कि केंद्रीकृत शासन प्रणाली का आंशिक रूप विद्यमान था।

2. धर्म और राजनीति का संबंध

प्रारंभिक मध्ययुगीन युग में धर्म का राजनीति पर गहरा प्रभाव था। इस काल में बौद्ध धर्म, जैन धर्म, और हिंदू धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों का प्रभाव बढ़ा। कई शासकों ने धार्मिक स्थलों का निर्माण कराया और धार्मिक संस्थाओं को संरक्षण दिया। वाद-विवाद का मुख्य बिंदु यह है कि धर्म और राजनीति के बीच संबंध कितना गहरा था। कुछ विद्वान मानते हैं कि शासकों ने धर्म को अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया, जबकि अन्य विद्वानों का मानना है कि धार्मिक नेताओं और शासकों के बीच संबंध अधिक जटिल और परस्पर निर्भर था।

3. आर्थिक संरचना

प्रारंभिक मध्ययुगीन काल की आर्थिक संरचना पर भी विद्वानों के बीच मतभेद हैं। इस काल में कृषि का प्रमुख स्थान था और व्यापारिक गतिविधियाँ भी बढ़ी थीं। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस युग में आर्थिक विकास धीमा था और समाज में आर्थिक असमानता बढ़ी। वहीं, अन्य विद्वानों का तर्क है कि इस काल में व्यापार और कृषि में नवाचार हुए, जिससे आर्थिक संरचना में सुधार हुआ।

4. सामाजिक संरचना और जाति व्यवस्था

इस युग में सामाजिक संरचना जटिल थी और जाति व्यवस्था का प्रभाव बढ़ा। सामाजिक वर्गों के बीच असमानता थी और सामाजिक गतिशीलता सीमित थी। वाद-विवाद का मुख्य मुद्दा यह है कि क्या इस युग की सामाजिक संरचना ने आर्थिक और राजनीतिक विकास को बाधित किया या इसे प्रोत्साहित किया। कुछ विद्वान मानते हैं कि कठोर जाति व्यवस्था ने समाज को बंधन में बांधा, जबकि अन्य विद्वानों का मानना है कि इसने सामाजिक स्थिरता और संरचना को बनाए रखा।

5. साहित्य और कला

प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में साहित्य और कला का भी महत्वपूर्ण विकास हुआ। इस युग में संस्कृत, प्राकृत, और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्यिक कृतियों का सृजन हुआ। कला के क्षेत्र में मंदिर निर्माण और मूर्तिकला का विशेष महत्व था। वाद-विवाद का मुख्य बिंदु यह है कि क्या इस युग की साहित्यिक और कलात्मक उपलब्धियाँ राजनीतिक और सामाजिक बदलावों का प्रतिबिंब थीं या स्वतंत्र सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ थीं।

निष्कर्ष

प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर वाद-विवाद हमें इस युग की जटिलता और विविधता को समझने में मदद करते हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों का समावेश हमें इस काल के इतिहास को व्यापक और संतुलित दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करता है। यह अध्ययन न केवल ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि किस प्रकार विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और धार्मिक घटक आपस में जुड़े हुए थे।

इस प्रकार, प्रारंभिक मध्ययुगीन राजनीति के अध्ययन पर वाद-विवाद एक महत्वपूर्ण शैक्षिक और ऐतिहासिक प्रक्रिया है, जो हमें अतीत के समाज और उसकी राजनीतिक संरचना को बेहतर ढंग से समझने में सहायता करती है।

3. आधुनिक इतिहासकारों ने दिल्ली सल्तनत काल के दौरान राज्य-निर्माण को किस प्रकार देखा। विस्तार से वर्णन कीजिए।

दिल्ली सल्तनत का काल भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग है, जो 13वीं से 16वीं सदी तक फैला हुआ था। इस समय की राज्य-निर्माण की प्रक्रिया और उसकी संरचना को आधुनिक इतिहासकारों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषित किया है। इस काल के दौरान दिल्ली

सल्तनत ने एक नई राजनीतिक और सामाजिक संरचना को स्थापित किया, जो भारतीय इतिहास की दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1. राजनीतिक दृष्टिकोण

आधुनिक इतिहासकारों ने दिल्ली सल्तनत काल के राज्य-निर्माण की प्रक्रिया को एक स्थिर और केंद्रीकृत राज्य व्यवस्था के निर्माण के रूप में देखा है। इस काल में एक सशक्त सुलतानत की स्थापना के साथ ही एक नई प्रशासनिक प्रणाली का निर्माण हुआ। इतिहासकारों का मानना है कि दिल्ली सल्तनत ने एक मजबूत राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा तैयार किया, जिसमें सुलतान ने स्वयं को एक शक्तिशाली और सर्वोच्च शासक के रूप में प्रस्तुत किया।

इस काल के दौरान कई प्रमुख सल्तानों ने अपनी शक्ति को मजबूत करने के लिए सैन्य विजय और राजनीतिक साजिशों का सहारा लिया। कुतुब-उद-दीन ऐबक, इल्तुतमिश, बलबन, और तुगलक वंश के शासक इस प्रक्रिया के प्रमुख उदाहरण हैं। उन्होंने अपने शासन को विस्तार देने के लिए न केवल सैन्य अभियानों का सहारा लिया बल्कि एक स्थिर प्रशासनिक ढांचा भी स्थापित किया।

2. सामाजिक दृष्टिकोण

दिल्ली सल्तनत के दौरान राज्य-निर्माण में सामाजिक संरचनाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान था। इस समय के दौरान सामाजिक ढांचे में कई बदलाव आए। सल्तानत ने एक नई सामाजिक व्यवस्था की शुरुआत की, जिसमें नए-नए वर्गों और जातियों का निर्माण हुआ।

आधुनिक इतिहासकार इस काल में मुस्लिम शासकों के आगमन और उनकी प्रशासनिक नीतियों को भारतीय समाज में एक नई सामाजिक संरचना के निर्माण के रूप में देखते हैं। सल्तानत के शासकों ने अपनी प्रशासनिक नीतियों के माध्यम से एक नई सामाजिक व्यवस्था को लागू किया, जिसमें तुर्क, अफगान और भारतीयों के बीच एक नया सामाजिक वर्गीकरण हुआ।

3. आर्थिक दृष्टिकोण

दिल्ली सल्तनत के काल में राज्य-निर्माण की प्रक्रिया में आर्थिक पहलुओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस काल में व्यापार, कृषि, और करों की व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। सल्तानत ने एक केंद्रीकृत कर प्रणाली स्थापित की, जिससे राज्य को स्थिर आर्थिक आधार मिला।

आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, सल्तानत के दौरान व्यापारिक गतिविधियाँ भी बढ़ीं, और दिल्ली एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में उभरी। इसके अलावा, कृषि उत्पादन में वृद्धि और कृषि करों की प्रभावी व्यवस्था ने राज्य की आर्थिक स्थिति को मजबूत किया।

4. संवैधानिक दृष्टिकोण

दिल्ली सल्तनत के काल में एक नई संवैधानिक संरचना की शुरुआत हुई, जो भारतीय राजनीतिक इतिहास में महत्वपूर्ण थी। आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, इस काल में

सल्तानत ने एक स्थिर और केंद्रीयकृत प्रशासनिक ढांचा स्थापित किया, जिसमें केंद्रीय सत्ता के तहत विभिन्न प्रशासनिक विभागों का निर्माण हुआ।

सुलतान ने न केवल अपने शाही अधिकारों को सुदृढ़ किया बल्कि विभिन्न प्रशासनिक और न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति के माध्यम से राज्य की संवैधानिक व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया। इस प्रकार, दिल्ली सल्तनत ने एक नई संवैधानिक व्यवस्था की नींव रखी, जो भविष्य के राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण रही।

5. सांस्कृतिक दृष्टिकोण

आधुनिक इतिहासकार इस काल को सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण मानते हैं। दिल्ली सल्तनत के दौरान विभिन्न सांस्कृतिक और धार्मिक पहलुओं का संगम हुआ, जिसने भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य को नया आयाम दिया।

सल्तानत के काल में फारसी और तुर्की संस्कृतियों का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस समय की वास्तुकला, साहित्य, और कला में नए-नए प्रयोग देखने को मिले। इस प्रकार, दिल्ली सल्तनत ने भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान किया और एक नई सांस्कृतिक पहचान स्थापित की।

निष्कर्ष

आधुनिक इतिहासकारों ने दिल्ली सल्तनत के राज्य-निर्माण की प्रक्रिया को एक जटिल और बहुपरकारी दृष्टिकोण से देखा है। इस काल में एक नई राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, संवैधानिक, और सांस्कृतिक व्यवस्था की स्थापना हुई, जिसने भारतीय इतिहास की दिशा को बदल दिया। दिल्ली सल्तनत के शासकों ने न केवल एक स्थिर और केंद्रीयकृत प्रशासनिक ढांचा तैयार किया बल्कि एक नई सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान को भी स्थापित किया। इस प्रकार, दिल्ली सल्तनत का काल भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण युग है, जिसका अध्ययन आधुनिक इतिहासकारों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

भाग-ख

6. चोल काल के दौरान राज्य पर टिप्पणी कीजिए।

चोल काल (9वीं से 13वीं शताब्दी) दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण और समृद्ध युग था। इस काल के दौरान चोल साम्राज्य ने न केवल अपने क्षेत्र का विस्तार किया बल्कि संस्कृति, कला, वास्तुकला, और प्रशासनिक व्यवस्था में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। चोल काल की शुरुआत वंश के महान राजा विजयालय चोल (850-870 ई.) से होती है, जिसने पल्लव वंश को पराजित कर तंजावुर में चोल साम्राज्य की स्थापना की।

प्रशासनिक व्यवस्था

चोल शासन में केंद्रीय और प्रांतीय प्रशासन का संगठित ढांचा था। राजा सबसे उच्च पद पर होता था और उसे 'चक्रवर्ती' कहा जाता था। उसकी सहायता के लिए मंत्रिमंडल होता था, जिसमें

प्रमुख मंत्री 'महासामंत' कहलाता था। राज्य को 'मंडलम' में विभाजित किया गया था, जिनका शासन करने के लिए राज्यपाल होते थे। मंडलम को आगे 'वलनाडू' और 'नाडू' में विभाजित किया गया था। प्रत्येक नाडू के अधीन कई गाँव होते थे, जिन्हें 'उर' कहते थे। ग्राम प्रशासन में स्वायत्तता थी और गाँव की सभा 'सभा' या 'महासभा' कहलाती थी, जो गाँव के प्रशासन, न्याय और कर संग्रहण के कार्यों का संचालन करती थी।

आर्थिक व्यवस्था

चोल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित थी। राज्य ने सिंचाई प्रणाली का विकास किया, जिसमें कावेरी नदी का विशेष महत्व था। नहरें, तालाब और जलाशयों का निर्माण किया गया ताकि फसल की सिंचाई हो सके। धान, कपास, और गन्ना प्रमुख फसलें थीं। व्यापार और वाणिज्य भी फल-फूल रहा था। तटीय शहरों, जैसे कि नागपट्टिनम और कावेरीपट्टिनम, ने समुद्री व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चोल व्यापारी दक्षिण-पूर्व एशिया और श्रीलंका तक अपने वस्त्र, मसाले और अन्य उत्पाद निर्यात करते थे।

सांस्कृतिक योगदान

चोल काल में कला और संस्कृति का अद्वितीय विकास हुआ। इस काल के दौरान चोल सम्राटों ने भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। तंजावुर में स्थित बृहदेश्वर मंदिर चोल वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह मंदिर ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित है और इसकी वास्तुकला अद्वितीय है। नटराज की कांस्य मूर्तियाँ, जो इस काल में बनाई गईं, विश्व प्रसिद्ध हैं। इस काल में न केवल मंदिरों का निर्माण हुआ, बल्कि धार्मिक साहित्य, विशेषकर तमिल साहित्य का भी विकास हुआ।

धार्मिक और सामाजिक जीवन

चोल काल में हिन्दू धर्म प्रमुख धर्म था और शैव धर्म का विशेष प्रभाव था। मंदिर समाज का केंद्र थे और धार्मिक क्रियाकलापों के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी आयोजन करते थे। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ इसी काल में हुआ, जिसमें अलवार और नायनार संतों ने धार्मिक गीतों और भजनों के माध्यम से भक्ति का प्रचार किया। इसके अलावा, बौद्ध और जैन धर्म का भी प्रभाव था, और धार्मिक सहिष्णुता बनी रही।

सैनिक और समुद्री शक्ति

चोल साम्राज्य की सैनिक शक्ति बहुत मजबूत थी। राजा राजराजा चोल प्रथम और उसके पुत्र राजेंद्र चोल प्रथम के समय में साम्राज्य ने श्रीलंका, मालदीव, और दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न हिस्सों पर विजय प्राप्त की। चोल नौसेना भी अत्यंत सशक्त थी और इसने दक्षिण-पूर्व एशिया के कई हिस्सों में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। नौसेना की शक्ति के कारण चोलों का समुद्री व्यापार भी फल-फूल रहा था।

वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति

चोल काल में वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति भी उल्लेखनीय थी। सिंचाई की उन्नत प्रणाली, वास्तुकला में तकनीकी निपुणता, और धातु कला में कुशलता इस काल की प्रमुख विशेषताएँ

थीं। कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए नए तरीकों का उपयोग किया गया और समुद्री नेविगेशन में प्रगति हुई।

निष्कर्ष

चोल काल दक्षिण भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम युग था। इस काल में कला, संस्कृति, विज्ञान, और प्रशासन में जो प्रगति हुई, उसका प्रभाव आज भी दिखाई देता है। चोल सम्राटों ने एक मजबूत और संगठित शासन की स्थापना की और समाज के विभिन्न वर्गों के बीच एकता और सहयोग की भावना को प्रोत्साहित किया। उनका योगदान भारतीय इतिहास में हमेशा स्मरणीय रहेगा।

7. पांड्य काल के दौरान राज्य के प्रशासन पर चर्चा कीजिए।

पांड्य काल के दौरान राज्य के प्रशासन पर चर्चा

पांड्य काल, जो भारत के दक्षिणी भाग में 6वीं से 13वीं शताब्दी तक फैला हुआ था, एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काल था। यह काल पांड्य वंश के शासनकाल को दर्शाता है, जिसने दक्षिण भारत में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पांड्य साम्राज्य ने एक संगठित और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की थी, जिसने उसके शासन को स्थिर और सुदृढ़ बनाया। इस काल के दौरान राज्य के प्रशासन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना आवश्यक है ताकि हमें इस ऐतिहासिक काल की प्रशासनिक प्रणाली की गहराई से समझ मिल सके।

1. प्रशासनिक संरचना

पांड्य काल के प्रशासन में एक अच्छी तरह से संगठित प्रणाली थी, जिसमें विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त किए गए थे। राज्य का प्रमुख पांड्य राजा होता था, जिसे 'नायकर' या 'राजा' कहा जाता था। राजा के नीचे विभिन्न प्रशासनिक और सैन्य अधिकारियों की एक पूरी श्रृंखला होती थी, जिनमें 'महाराजा', 'दिवान' और 'सैन्य कमांडर' शामिल थे। इन अधिकारियों का कार्य राजा के आदेशों को लागू करना और राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

राज्य को विभिन्न प्रशासनिक विभागों में बाँटा गया था, जिसमें राजस्व, न्याय और सुरक्षा विभाग शामिल थे। प्रत्येक विभाग का एक प्रमुख अधिकारी होता था, जो संबंधित विभाग की जिम्मेदारी संभालता था। इसके अलावा, स्थानीय प्रशासनिक स्तर पर भी कई अधिकारी होते थे, जो छोटे-छोटे प्रांतों या क्षेत्रों की देखरेख करते थे।

2. राजस्व और कर व्यवस्था

राजस्व एक महत्वपूर्ण तत्व था जो राज्य के प्रशासन को सुचारु बनाए रखने में सहायक था। पांड्य काल में कृषि, वाणिज्य और व्यापार से राजस्व एकत्रित किया जाता था। राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर निर्भर थी, और कृषि से प्राप्त कर महत्वपूर्ण था। करों का संग्रहण गाँव और ज़िले के स्तर पर किया जाता था और इनका एक हिस्सा राज्य के खजाने में जमा होता था।

करों की व्यवस्था में 'तंक्ती' (कर प्रणाली) का महत्वपूर्ण स्थान था। यह कर प्रणाली भूमि पर आधारित थी, जहाँ भूमि के आकार और उसकी उपज के अनुसार कर तय किए जाते थे। इसके अतिरिक्त, व्यापार और अन्य आर्थिक गतिविधियों पर भी कर लगाए जाते थे। कर संग्रहण की जिम्मेदारी स्थानीय अधिकारियों पर होती थी, जो इन करों को समय पर एकत्रित कर राजा के खजाने में जमा करते थे।

3. न्याय व्यवस्था

पांड्य काल की न्याय व्यवस्था भी व्यवस्थित और प्रभावी थी। राजा या उच्च अधिकारी न्याय के मामलों को निपटाने का कार्य करते थे, लेकिन छोटे-मोटे मामलों के लिए स्थानीय न्यायाधीश और पंचायती प्रणाली का उपयोग किया जाता था। न्याय के मामले में राजा के दरबार में सुनवाई होती थी, और वहाँ पर साक्ष्यों की सुनवाई के बाद निर्णय लिया जाता था।

स्थानीय स्तर पर, न्याय व्यवस्था का संचालन गाँव के प्रमुख और पंचायत द्वारा किया जाता था। इन पंचायतों का कार्य विवादों को सुलझाना और स्थानीय मामलों का निपटारा करना था। पंचायतों का निर्णय आमतौर पर समाज के मान्यताओं और परंपराओं के अनुरूप होता था।

4. सुरक्षा और सैन्य व्यवस्था

सुरक्षा और सैन्य व्यवस्था पांड्य काल के प्रशासन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पांड्य सम्राटों ने एक सुसंगठित सेना का निर्माण किया था। सेना को विभिन्न यूनिट्स में विभाजित किया गया था, जिसमें पैदल सैनिक, घोड़सवार और युद्ध हाथी शामिल थे। इन सेना की इकाइयों का संचालन सेना के उच्च अधिकारियों द्वारा किया जाता था।

सैन्य के प्रमुख, 'सैन्याध्यक्ष', युद्ध की रणनीति तैयार करते थे और सेना को प्रशिक्षित करते थे। राज्य की सीमाओं की रक्षा के लिए किले और गढ़ बनवाए गए थे। इन किलों में सुरक्षा व्यवस्था का ध्यान रखा जाता था और इनकी निगरानी नियमित रूप से की जाती थी।

5. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रशासन

पांड्य काल के दौरान, राज्य ने सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों की मेज़बानी की जाती थी, जो समाज की सांस्कृतिक एकता और धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा देती थी। मंदिरों और धार्मिक स्थलों की देखरेख के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त किए जाते थे।

शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रोत्साहन के लिए भी प्रशासनिक स्तर पर प्रयास किए गए। पांड्य काल में मंदिरों और आश्रमों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती थी, जिससे शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियाँ संरक्षित और बढ़ावा दी जा सकें।

निष्कर्ष

पांड्य काल का प्रशासनिक ढांचा एक संगठित और प्रभावी प्रणाली का परिचायक था। इसके तहत, राज्य की सुरक्षा, न्याय व्यवस्था, राजस्व प्रणाली और सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रबंधन

कुशलता से किया जाता था। यह काल भारतीय इतिहास में प्रशासनिक दक्षता और स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। पांड्य प्रशासन की ये विशेषताएँ आज भी अध्ययन के लिए प्रेरणादायक हैं और हमें उस समय की प्रशासनिक सूझबूझ और क्षमता का एक सटीक चित्र प्रदान करती हैं।